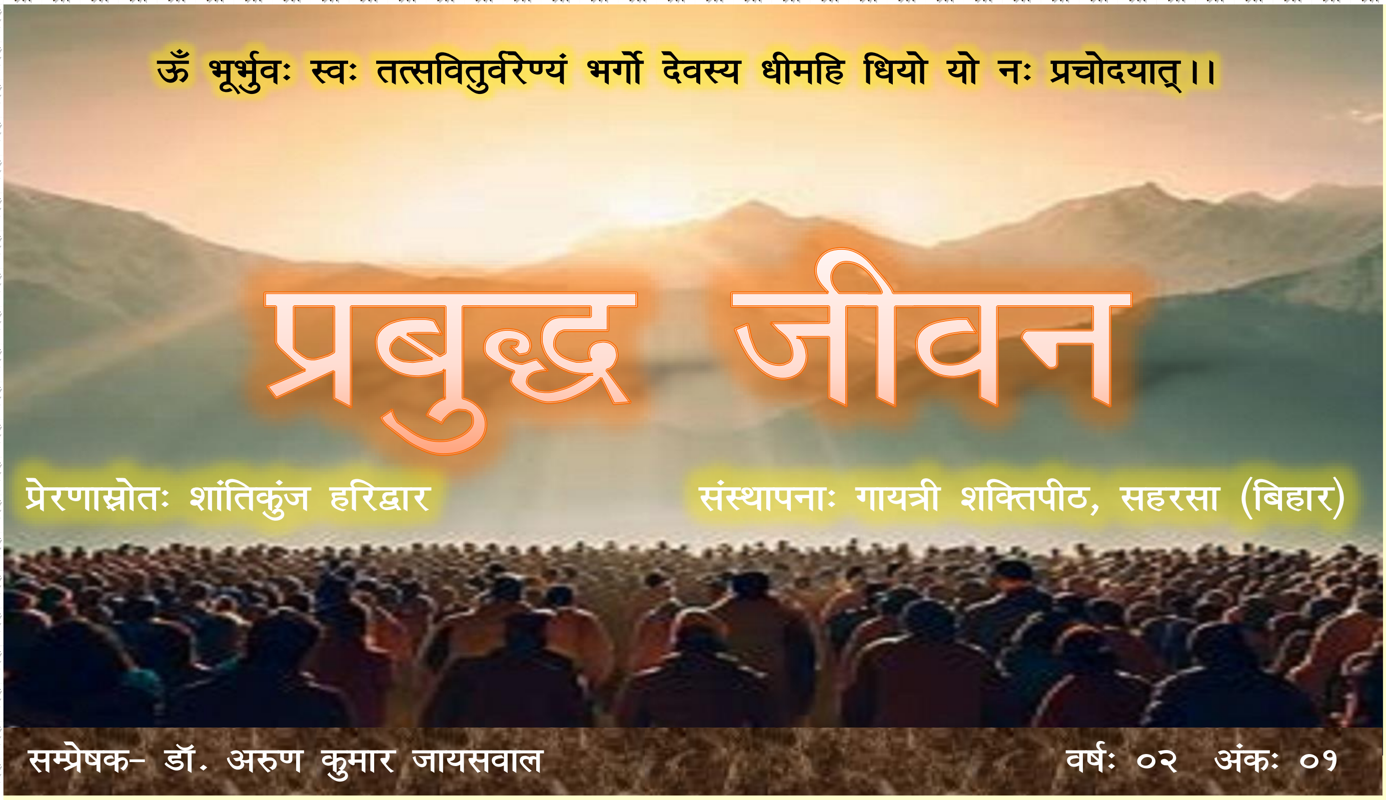

'योनः'

'योनः' शब्द का अर्थ-चिन्तन चमत्कारी है। इसमें गायत्री महामंत्र में समायी गायत्री चेतना की वह अलौकिक सामर्थ्य है, जो सामूहिकता सामाजिकता की समष्टि का पाठ पढ़ाकर सभी को माता गायत्री के आंचल की सुखद छांव की सुखमय अनुभूति प्रदान करती है। योनः का अर्थ ही है- जो हम सबको। ऐसा सोचना- चिन्तनशैली, विचारशैली का अनूठापन है। इस अनूठेपन की सुगन्ध आज खो जाने के कारण ही चारों ओर मैं-मैं का शोर हो रहा है।

'मैं' नहीं 'हम'- यह सोच आज भूल चुके हैं। अब तो हम नहीं मैं का जोर है। इसी कारण परिवार टूटे हैं, समाज बिखरा है। सन्तानों के लिए माता-पिता पराए हैं और परिवार के लिए समाज पराया है। यह विध्वंसक स्थिति केवल इसलिए है कि 'नः' यानि हम के सुमधुर संगीत का स्थान अहम् यानि मैं के ध्वनि प्रदूषक शोर ने ले लिया है। अब संगीत के स्थान पर शोर की प्रतिष्ठापना के जो परिणाम जीवन में होने चाहिए, वही हो रहे हैं।

जीवन में सब ओर फैल रही चीख-पुकार के शोर को यदि रोकना है, तो उपाय केवल एक ही है- गायत्री महामंत्र के तत्त्वदर्शन को स्वीकारा, अपनाया जाए। अहम् के स्थान पर 'नः' को वरीयता दी जाए। मैं का शोर हटाकर 'नः' का जीवन संगीत सुना जाए। ऐसा होने पर ही आन्तरिक रूप से व्यक्ति के व्यक्तित्व में एवं बाहरी रूप में परिवार व समाज के सभी आयामों में, सुखद व सुखमय स्थिति बन सकेगी और फिर सभी माता गायत्री के आंचल की छांव का संरक्षण, सन्तोष व महिमामय जीवन का अनुभव कर सकेंगे।

हृदय से हृदय तक

इस माह हृदय में अंतर्निहित श्रेष्ठ भावों को, श्रद्धा को पूर्णता प्रदान करने हेतु गुरु पूर्णिमा का पावन पर्व अपना प्रेमपूर्ण दिव्य स्पर्श लाया है। गुरुमहिमा के बारे में प्रसिद्ध उक्ति है– "गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पांय। बलिहारी गुरु आपकी, गोविंद दियो मिलाय।।" संत कबीर कहते हैं कि गुरु और गोविन्द, दोनों ही खड़े है। अब मैं पहले किसके चरण स्पर्श करूं? अंततः वे गुरु की बलिहारी लेते हैं कि हे गुरुवर! यदि आप न होते तो मुझे गोविन्द की, परमतत्त्व की, ईश्वरत्व की प्राप्ति न हुई होती। हमारे आध्यात्मिक-सांस्कृतिक साहित्यसागर में गुरु का महत्त्व इतना अधिक बताया गया है कि गुरु का स्मरण किये बिना हमारा कोई कार्य सफल नहीं होता। गुरुतत्त्व को जानने-मानने, उस पर अपनी श्रद्धा और अधिक गहरी जमाते हुए अपना अंतरंग न्यौछावर करने का पर्व है गुरुपूर्णिमा, जिसे व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है।

वस्तुतः एक कुम्भकार की तरह गुरु अपने शिष्य को गढ़ता है। इस कार्य में उसे कहीं चोट भी लगानी पड़ती है, कुसंस्कारों का निष्कासन भी करना पड़ता है तथा कहीं अपने हाथों की थपथपाहट से उसे प्यार का पोषण देकर उसमें सुसंस्कारों का प्रवेश भी वह कराता है। यह वस्तुतः एक नये व्यक्तित्व को गढ़ने की प्रक्रिया का नाम है। इसलिए बाहर से गुरु का व्यवहार कैसा भी हो, कैसा भी प्रतीत होता हो परंतु अंदर से गुरु का हृदय शिष्य के प्रति प्रेम से भरपूर होता है।

अन्य पारिवारिक सामाजिक प्राणियों से तो मात्र शारीरिक मानसिक-भावनात्मक सम्बन्ध ही होते हैं परंतु आध्यात्मिक स्तर का उच्चस्तरीय प्रेमपूर्ण संबंध तो मात्र गुरु के साथ ही संभव हो पाता है जिससे आत्मिक विकास की संभावनायें बनती हैं। गुरु वास्तव में मानवीय चेतना का मर्मज्ञ होता है, जो शिष्य की अंतर्संरचना में उलट फेर कर सकने में सक्षम होता है, उसका प्रारब्ध तक बदल सकने में समर्थ होता है। सभी साधक गुरु नहीं बन सकते। कुछ ही बन पाते हैं और जिन्हें वे मिल जाते है, वे निहाल हो जाते हैं।

वे अत्यन्त सौभाग्यशाली कहे जाते है जिन्हें सद्गुरु के दर्शन हुए। जो उनका सदेह दर्शन नहीं कर पाए पर उनके शक्ति प्रवाह से जुड़ गये व अपने व्यक्तित्व में अध्यात्म चेतना के अवतरित होने की पृष्ठभूमि बनाते रहे, वे भी सौभाग्यशाली तो हैं ही। जो गुरु की विचार चेतना से जुड़ गया, वह भी उनके अनुदानों का अधिकारी बन गया। शर्त केवल एक ही है– पात्रता का सतत् अभिवर्धन तथा गहनतम श्रद्धा का गुरु के आदर्शों पर आरोपण। जो इतना कुछ अंशों में भी कर लेता है वह उनका उतने ही अंशों में उत्तराधिकारी बनता चला जाता है। परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं माता भगवती देवी दोनों ही आज हमारे बीच स्थूल शरीर से नहीं है किन्तु ऋषियुग्म रूपी गुरुसत्ता की सूक्ष्म व कारण शक्ति का प्रवाह यथावत् और भी प्रखर रूप में हम सबके बीच विद्यमान है। आवश्यकता है सही रूप में उनसे जुड़ने की। लाखों नहीं, करोड़ों व्यक्तियों के जीवन की दिशाधारा को आमूलचूल बदल देने का कार्य अभी भी ऋषि युग्म की कारण सत्ता द्वारा सम्पन्न हो रहा है। यह देखा व अनुभव किया जा सकता है।

गुरु देह नहीं है बल्कि एक सत्ता है, शक्ति का पुँज है जो अपनी सक्रियता में व्यापक हो जाती है जिसकी अभिव्यक्ति शास्त्रकारों ने "अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्" के रूप में की है। गुरुगीता के वचनों– "ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्। मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोःकृपा।।" पर पूर्ण विश्वास करते हुए गुरुसत्ता से यही प्रार्थना करते हैं कि वे आपकी श्रद्धा को परिपक्वता, समर्पण को पूर्णता प्रदान करें और आपके अंदर अनन्त संभावनाओं का द्वार खोल आपको आत्मिक प्रगति के पथ पर अग्रसर करें।

अरुण कुमार जायसवाल

FAILURE

The most prevailing feeling in this world with maximum human beings on this earth is that of having failed at some time or another during the most important juncture of their lives. They overlooked the occasion, underestimated the significance, missed wisdom and maturity at the age or else simply because of plain callousness- miserably failed to be there: physically, mentally and emotionally. The feeling of failure also stems from a lot of comparisons made with fellow human beings. While one also may has made a mark in the world, somehow the success of the other person, it could be a childhood friend, a school classmate, a workmate or a neighbor or anyone at all- the feeling of comparison adds up to the feeling of being a failure. This comparison extends beyond one's own self and be with their children, life partners, parents, siblings and other family members.

Generally, the standard notion of failure is the indication of the non-achievement of success. To fail is simply understood as to have not been able to succeed. But this is only one part of the entire picture. One can fail despite being successful. One can succeed despite being a failure. For example, the generic standards of the measurement of failure are where one has not been able to accomplish the material standards of the world and the lined benchmark. One maybe a billionaire and still be lonely because of failed relationships everywhere and that could be a reason why the individual considers himself as a loser in a sense. On the other hand, a person has a lovely, supportive family but this person has never been able to achieve a good, secured and consistent job that is essential for the financial stability of the family.

Self-worth too does not come from an outwardly meaning of achievement or achievements. Self- worth comes when a person has arrived at an understanding of herself/himself after deep introspection. When one arrives at a point in life and distinguishes true happiness. Like Swami Vivekananda says that growth must happen from inside out. Success with growth comes from a deep inner realization. This growth transcends failure and success and at one point the debate is no longer necessary because the human being has risen and has arrived at a purpose in life.

The feeling of failure can weigh one down and make one morally weak and despondent all the time. It becomes a habit and then a central part of an individual's character. Real failure occurs when a person refuses to try. Refuses to make an attempt and pick up the first broken piece and mend. The mending of a failed mind is a very testing thing. The first step to take is the most daunting task. And despite all of that, to combat failure, mental strength has to be gathered and that first move made.

Failure is not the end of the world. It is the end when one quits and does not want to attempt. Or the other way of looking at it is by knowing that something is not working out the way one perceives it and therefore, instead of wasting time and losing heart- to try something else and move on. With the same energy and passion. To fall and rise up is the signature of a true champion. The outcome of the entire journey is not measured in triumph and letdown but it is stated in how much one learnt from the journey. The tears, the blood and the sleepless nights must add to the sum total of a perspective gained. A growth that can guide and lead others.

Failure must not be looked as a negative thing. It must be seen as the learning of life lessons. And none of life's lessons are easy.

- **Dr. Avhinav Shetty Jaiswal**

आओ करें निज मन पर शोध

आज की सबसे अधिक जरूरत है हर मानव का अपने ही मन पर शोध। हर मानव अपने मन की निगरानी करे, अपने मन में उठनेवाले विचारों को देखे, उनकी शुभता-अशुभता का आकलन करे फिर भक्ति, ज्ञान और कर्म से अपने मन को सुन्दर बनाने की दिशा में लगातार प्रयत्न करे तो यह संसार अपने आप सुन्दर हो जाएगा और सुन्दर मन में परमात्मा का वास होगा।

आज देखा जाए तो मानव मन की कितनी दुर्दशा हो गई है । हर कोई नफरत और विद्वेष की आग में जल रहा है । व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व एक दूसरे के आँख की किरकिरी बने हुए हैं । परिवार को तोड.ने का मुख्य कारण मानव मन की कलुषता है फिर क्या होगा यही तो होगा । हम अपने ही नफरत की आग से स्वयं को जला रहे हैं और अपनी हर कोमल भावनाओं – प्रेम, ममता, समता, शुचिता, श्रद्धा, प्रज्ञा, मेधा, करुणा आदि का गला घोंट दे रहे हैं तो फिर परमात्मा कैसे मिलेंगे ? भाई से नफरत करनेवाला लाख अपने घर में पूजा कर ले भगवान प्रसन्न नहीं होनेवाले । अपनी पत्नी या अपने पति को दर्द देनेवाले पति-पत्नी लाख शक्तिपूजन कर ले, शक्ति प्रसन्न नहीं होनेवाली, ननद से शत्रुतापूर्ण व्यवहार करनेवाली भाभियाँ लाख शिवरात्रि का व्रत रख लें शिव प्रसन्न नहीं होनेवाले। भाभी को हर समय परेशान करनेवाली ननदें लाख लक्ष्मी पूजन कर लें लक्ष्मी उसके घर कदम नहीं रखनेवाली, सास – ससुर, पति से बुरा बर्त्ताव करनेवाली बहूएं लाख तीज और करवा चौथ का व्रत रख लें करवा मैया प्रसन्न नहीं होनेवाली। माता - पिता के साथ दुर्व्यवहार करनेवाली, उनके अरमानों को कुचलनेवाली या उन्हें नहीं पूछनेवाली संतति लाख परमात्मा का मन्दिर स्थापित कर लें परमात्मा उसके घर में नहीं वास कर सकते हैं।

रिश्ते-नाते तो परमात्मा के द्वारा दिए गए सर्वोत्तम उपहार हैं परन्तु हम अपनी कटुता के कारण उनसे दूर हो जाते हैं । भाई - भाई में दीवार खडी हो जाती है । सारा धन, मकान, जमीन माँ - बाप जोड.ते हैं परन्तु उसे हथियाने के लिए उनकी संतति लोलुप दृष्टि रखे रहती है । यहाँ तक कि उन्हें उनके ही घर से निकालकर उस मकान का बँटवारा करके बेचने में भी उन्हें संकोच नहीं होता कि बूढे माँ - बाप आखिर कहाँ जाएँगे ? कई ऐसे उदाहरण हमारे समाज में बिखरे पडे हैं ऐसे कितनों की गिनती की जाए ? राजधानी दिल्ली में एक बेटा अपनी माँ की सारी सम्पत्ति यह कहकर बेच दिया कि वह उन्हें अमेरिका में अपने घर पर रखेगा परन्तु हवाई अड्डे पर उन्हें छोडकर चला गया । माँ दर-दर भटकती फिरीं । यह सब संवेदनहीनता और लोलुपता की पराकाष्ठा है । जब माँ-बाप से रिश्ते तार-तार हो रहे हैं तो अन्य रिश्तों की बात ही क्या है ? संतति खुद परिश्रम करके ये सब जोडें तो उन्हें पता चले । माँ - बाप के हिस्से के लिए लड.ते - लड.ते उनकी संतति इतनी अंधी हो जाती है कि कितना भी उन्हें मिल जाए उनका पेट नहीं भरता । वहीं पर, अगर उनकी बहन गरीबी में जी रही है तो वे उसे फूटी कौडी तक नहीं देते । कारण माँ - बाप की सम्पत्ति पर सिर्फ बेटे का अधिकार होता है । कितना भी कानून बन जाए परन्तु बेटी को माँ - बाप की सम्पत्ति में हिस्सा देना या माँ - बाप का बेटी के लिए कुछ करना भाई - भावजों के गले नहीं उतरता । अरे ! जिस बेटी ने प्रेम जल से अपने मायके को कभी सींचा था उसके प्रति ऐसी सोच फिर क्या होगा घर - परिवार का । हर तरफ स्वार्थ का नग्न नृत्य देखने को मिलता है । किसी के पास एक कोठी है तो उसे दो या तीन चाहिए । किसी के पास जमीन का एक टुकडा है तो उसे कई जमीन चाहिए, उनमें संतोष न के बराबर है।

अब पुनः संतोष की खेती करनी होगी, सम्वेनशीलता की खेती करनी होगी । भावनाओं के अकाल को दूर करना होगा और एक समा बाँधना होगा जिससे हर घर में प्रेम का, भक्ति का, आपसी भाईचारे का, विश्वास का वातावरण बने । हर मानव के अन्दर भावनाओं की निर्मल गंगधार बहे जिसमें उसके आसपास का परिकर आप्लावित हो सके । समस्त मानवजाति को आज अपने ही मन के पथ-प्रदर्शन की आवश्यकता है । आज की शिक्षा मानव मन के भावनात्मक सुधार पर अधिकाधिक कार्य करे तो वह दिन दूर नहीं होगा जब धरती पर आत्मवत् सर्वभूतेषु और वसुधैव कुटुम्बकम् की सर्वकल्याणकारी भावनाओं का वटवृक्ष सभी के मनों में पनपेगा और धरती पर स्वर्ग का अवतरण हो जाएगा।

– डॉ. लीना सिन्हा

सुधा बिन्दु

(प्रत्येक रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा में बोले गए विषय के कुछ अंश और जिज्ञासा के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर)

- **जिस जीवन से आपका व्यक्तित्व परिभाषित होता है, वह घटना आपकी इच्छा के बिना घटित हुई है।**
- **हमारे जीवन की 90% घटनाएं हमारे बिना इच्छा के घटित हुई हैं, फिर क्या हमारी जरूरत बिना इच्छा के पूरी नहीं होगी, अगर वह जरूरत है तो? चिंता मात्र अहंकार के कारण होती है और अहंकार आता है अविद्या के कारण यानी अज्ञान के कारण।**
- **प्रकृति और परमात्मा आपका पालन- पोषण करने में असमर्थ है, चिंता तभी आप कर रहे हैं।**
- **तीन घटनाएं बहुत महत्वपूर्ण होती है जीवन में- जन्म, विवाह और मृत्यु । कहते हैं इसको टाला नहीं जा सकता।**
- **भगवान ने मनुष्य जीवन दिया है तो अपना कर्म भली- भांति करना चाहिए। कर्म नहीं भूलना चाहिए और बुद्धिमत्ता से करना चाहिए यानि अपना धर्म पालन करना चाहिए।**
- **धर्म क्या है? धर्म है सदाचरण, धर्म है प्रकृति के नियमों का पालन।**
- **हम किसी का बिगाड़ या नुकसान करने के लिए सक्षम हैं ।पर सच यह है नुकसान कोई किसी का करने के लिए सक्षम नहीं है ।जहां तक बने सहयोग करना चाहिए, सृजन करना चाहिए। क्योंकि प्रकृति के नियम का पालन हमें करना है और प्रकृति का सत्व गुण सृजन है, ध्वंस नहीं।**
- **सिर्फ जरूरत की चिंता करने से कुछ मिलने वाला नहीं है ।जरूरत के लिए आप मेहनत करिए, चिंता क्यों करते हैं? कर्म करिए।**
- **सद्विवेक कर्म का परिणाम है, चिंता का परिणाम केवल पागलपन है, अवसाद है।**
- **चिंतन और चिंता दोनों अलग-अलग चीज है। विचारशीलता चिंतन है और चिंता का मतलब है कि केवल आप परेशान हैं ।आप कुछ कर नहीं रहे हैं, न मानसिक श्रम, न शारीरिक श्रम। जो मानसिक श्रम विहीन है, शारीरिक श्रम विहीन है, तो होगा क्या ?सिर्फ चिंता होगी।**
- **पैदा होने से पहले क्या आपने योजना बनाई थी, प्लान किया था कि हम डॉक्टर, इंजीनियर, व्यापारी, ऑफिसर बनेंगे? नहीं, कतई नहीं ।**
- **गायत्री को आत्मा कहते हैं तथा गंगा को काया कहते हैं।**
- **गायत्री माता हंस पर बैठकर, कमंडल लेकर नहीं आती हैं, वह केवल करुणा के रूप में आपके अंदर आएंगी, यही उनका स्वरूप है जो आपको देवता बना जाएगी।**
- **आप हैवान या शैतान की तरह से नहीं जी सकेंगे, आप मालदार या पूंजीपति की तरह से नहीं जी सकेंगे। आपके जीने एवं रहने का ढंग बदल जाएगा। आप बाँटकर खाएंगे तथा दूसरों की मुसीबत को बांटने का काम करेंगे।**
- **आप अपने बच्चों को इंजीनियर, डॉक्टर, वकील, दरोगा बनाएं पर संस्कारवान जरूर बनाएं ।अगर संस्कारवान नहीं बनेंगे तो वे समाज के लिए समस्या बनेंगे, तबाही लाएँगे।**
- **गायत्री को हम माता कहते हैं, गंगा को भी माता कहते हैं ।माता कोई देवी या औरत का नाम नहीं है ,माता एक आदर्श का नाम है ,सिद्धांत का नाम है।**
- **सूरजमुखी पौधा होता है सूरज की ओर घूमता रहता है। अगर हम कहें कि सूरज का सच्चा उपासक कौन? गायत्री मंत्र का सच्चा उपासक कौन? तो सूरजमुखी का पौधा ।हमें सूरजमुखी से सीखना चाहिए फिर गायत्री मंत्र का रहस्य भी पता चल जाएगा ।**
- **आज परीक्षा में जो घोटाला हो रहा है, घोटाला करने वाले पनप रहे हैं, फल-फूल रहे हैं ,विद्यार्थियों में लालच जगाने में कामयाब हो रहे हैं ,अच्छे विद्यार्थी मायूस हो रहे हैं, विश्वास का संकट खड़ा हो रहा है। पैसे**

वाले आगे की पंक्ति में पहुंच गए हैं। आप कल्पना कीजिए कि वह शिक्षक कैसा होगा ?वह शैक्षणिक वातावरण कैसा होगा? जिसने भगत सिंह को जन्म दिया होगा ।वह शिक्षक कौन होगा? वह भी तो कोई शिक्षक होगा, जिन्होंने महामानवों को पैदा किया होगा।

- शिक्षक हमें द्विज बनाते हैं, शिक्षा हमें द्विज बनाती है। द्विज मतलब दूसरा जन्म ।अगर शिक्षा दूसरा जन्म देने में समर्थ है, तो ही शिक्षा की सार्थकता है।
- हम व्यक्ति के रूप में जन्म लेते हैं, शिक्षा हमें व्यक्तित्व देती है, शिक्षक हमें व्यक्तित्व देता है। अगर शिक्षक शैक्षणिक प्रक्रिया और शैक्षणिक वातावरण मिलकर के शिक्षार्थी में व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं तो इन सबों की सार्थकता है।
- शिक्षा में चार चीजें है- एक शिक्षक हैं, दूसरा शिक्षार्थी है, तीसरा शिक्षण है और चौथा है शैक्षणिक वातावरण।
- शिक्षक, शिक्षार्थी और शिक्षण इनका खाद-पानी कहां से आता है? किसान अच्छा, बीज अच्छा और खेती करने का तरीका भी अच्छा, लेकिन मिट्टी ठीक नहीं है तो क्या होगा? किसान कौन? शिक्षक, खेती का तरीका कौन? शिक्षण, बीज कौन? शिक्षार्थी ।तो शिक्षक अच्छा, शिक्षार्थी भी अच्छा, शिक्षण की क्रिया भी अच्छी है, सारी चीजें अच्छी हैं, लेकिन शैक्षणिक वातावरण ठीक नहीं है तो क्या होगा? तो अच्छा शिक्षक, अच्छे शिक्षार्थी और अच्छा शिक्षण में घुन लग जाएगा। खाद-पानी है शैक्षणिक वातावरण।
- आज दुनिया में अच्छे बीज हैं, अच्छे एग्रीकल्चर साइंटिस्ट हैं, पर मिट्टी खोखली हो रही है ।जो फसलें पैदा हो रही है उसमें टॉक्सिन बढ़ रहा है। प्रश्न शिक्षक का नहीं है, प्रश्न शिक्षार्थी का नहीं है, प्रश्न शिक्षण का भी नहीं है, प्रश्न जीवन मूल्यों के संकट का है।

जिज्ञासा

प्रश्न:-हम कौन हैं? इसे पता करने का, कृपया मार्गदर्शन दें।

उत्तर: - एक शब्द होता है इन्ट्रोस्पेक्शन- आत्मनिरीक्षण। आप विवेक के साथ आत्म निरीक्षण करेंगे और करते ही रहेंगे तो धीरे- धीरे पता चलेगा। पहले ये नहीं कि आप कौन हैं, पहले ये पता लगाएं कि आप कौन नहीं? जैसे देह, ये परिवर्तित होता रहता है, ये नहीं है, क्योंकि जब आप सो जाते हैं, तब भी सुख-दुख बाकी रहते हैं। तब भी स्वप्न बाकी रहता है, स्वप्न का डर बाकी रहता है। उसी तरह मन नित्य परिवर्तनशील है, जब सो जाते हैं तो लगता है मैं जो है जिंदा है, मैं तो यथावत है, सोते समय भी। जब आप जागते हैं, फिर मैं हाजिर हो जाता है। पर मन तो यथावत रहता नहीं है, कुछ नए विचार, कुछ दूसरी कल्पनाएँ मन में आ चुकी रहती हैं। इस तरह धीरे-धीरे पता चलता रहेगा कि हम कौन नहीं हैं, फिर पता चलेगा कि हम कौन हैं। तो ये दीर्घकालिक परीक्षण है, कार्यक्रम है। और मज़े की बात जिस दिन आपको पता चलेगा कि आप कौन हैं, उस दिन आप समाधि में चले जाएंगे। प्याज की परतें जिस तरह छिलते हैं, उसी तरह अपनी परतें भी छिलते जाएं, छिलती परतों के साथ एक दिन पता चल जाएगा, जिसे कहते हैं निर्वाण। तो यही बात है।

प्रश्न:-सपने में खुद की मौत को बार-बार देखने का क्या मतलब है ?

उत्तर: - सपने तो सपने होते हैं। बहुत ज्यादा मूल्य हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता है। सपने अलग-अलग तल से आते हैं। कुछ सपने वातावरण से आते हैं, कुछ सपने हमारे सोच-विचार से आते हैं, कुछ हमारी इच्छाओं से आते हैं, कुछ अंतर प्रज्ञा से आते हैं। तो सपने का कोई एक कारण नहीं है। इसलिए ये नहीं कहा जा सकता कि इस सपने का ये मतलब है और सपने का मतलब हो सकता है और नहीं भी हो सकता है। यह इंडीविजुअल पर निर्भर करता है, इसे जनरलाइज नहीं किया जा सकता। इसका सामान्यीकरण संभव नहीं है। इसलिए सपना आपकी प्रकृति, आपकी मनःस्थिति, आपकी परिस्थिति, जीवन चेतना के तल का परिणाम होता है और जो परिणाम होता है, मन चित्रित करता है उस अवस्था को, और ये भी हो सकता है कि इसका कोई मतलब ना हो और हो सकता है मतलब हो। सपने में मृत्यु देखना, सामान्य क्रम में कहते हैं कि जीवन में वृद्धि होती है। तो मृत्यु का सपना, लाश का सपना, ऐसा कहते हैं कि सुखद होता है।

प्रश्न:-किसी कारण वश किसी का तीज व्रत छूट जाये तो उसे दुबारा करना चाहिए या नहीं?

उत्तर: - देखिए, व्रत आपके अंतःकरण की स्वीकारोक्ति पर निर्भर करता है, व्रत विवशता नहीं है, कोई भी व्रत मजबूरी नहीं है। व्रत अंतःकरण की स्वीकारोक्ति है। व्रत कई तरह के होते हैं, पर्व- त्योहार का व्रत, ग्रहों का व्रत और आपकी आवश्यकता के अनुसार, आपकी जीवन चेतना की अवस्था के अनुसार, आपको कौन सा व्रत आवश्यक है? किसी जानकार से पूछकर, मार्गदर्शन लेकर किया जाता है। दुबारा करना कोई आवश्यक नहीं है। मन नहीं मानता तो कर लीजिये। पर हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि व्रत, उपवास का निर्धारण, शरीर की अवस्था के अनुसार हो। जितना सध जाए, उतना ही साधिये। जितना शरीर अनुमति दे, मन अनुमति दे, उतना ही करें। किसी को गैस्ट्रिक की बीमारी है, शुगर की बीमारी है, उस हिसाब से निर्धारण करें, हाँ मन सुनिश्चित संकल्पवान है, मन दृढ़ है, विचार मजबूत है, तो कुछ नहीं होता, आराम से सध जाता है।

प्रश्न:-क्या लड़की को शंख बजाना चाहिए?

उत्तर: - एकदम बजाना चाहिए, ये कहीं की मान्यता नहीं है कि लड़की को शंख नहीं बजाना चाहिए। प्रतिदिन शंख बजाने से फेफडा मजबूत होता है, जितनी दूर तक आवाज जाती है नकारात्मक ऊर्जा का नाश होता है, इसलिए सभी को शंख बजाना चाहिए।

प्रश्नः-पढ़ाई के वक्त नींद लगती है, जिस कारण चाय पीते हैं, कभी- कभी नींद नहीं लगती है, लेकिन डर है कि चाय की लत ना लग जाए, क्या करें?

उत्तर: - दो बातें हैं-ज़्यादा नींद लगती है तो हीमोग्लोबिन चेक कराएं, बी 12 चेक करायें, अगर कम है तो हेल्दी फूड लें, दिनचर्या सही करें, दूसरा पढ़ाई में मन का नहीं लगता, तो पढ़ाई में मन लगाने की कोशिश करें, रुचि जगाएँ । पढ़ाई को थोड़ा टेस्टी बनायें, स्वादिष्ट बनाएँ यानी रुचिकर बनाएं। रुचिकर विषयों को पढ़ने में नींद नहीं आती। थोड़ी समझदारी से मन रमायें। चाय की लत न लगे, ये आपने पूछा है, तो हम पूछते है कि आप चाय पीते क्यों है? नींद न आए इसलिए चाय पीते हैं, तो चाय की जगह आप पानी पीजिए, बार-बार पानी पीजिए, जहाँ पर आप पढ़ रहे हैं वहीं पर थोड़ा टहल लीजिए, पूरे चेहरे पर और आंख पर पानी का छींटा लगाएं, कई तरीका है, रात में न जगें, ब्रह्ममुहूर्त में यानी सुबह में पढ़ाई करें, रात में कम से कम 7 घंटे की नींद लें, लिखते हुए पढ़ाई करें, मूल बात है पढ़ाई को थोड़ा रुचिकर बनायें, बात बन जाएगी। वैसे मन तो चंचल होता है, मन को लगाना पड़ता है। तामसी भोजन, राजसी भोजन, गरिष्ठ भोजन खायेंगे तो मन भटकेगा ही। सात्विक भोजन करें मन स्थिर रहेगा, शांत रहेगा, एकाग्र रहेगा। लेकिन आप तो पिज़्ज़ा, बर्गर, चाउमिन, मोमोज, गोलगप्पा, पकौड़ा, कचरी, फुलौरी खायेंगे और चाहेंगे कि हम सवस्थ रहें, सुन्दर लगें, पढ़ाई भी कर लें, टॉप भी कर जाएं, पर ऐसा संभव नहीं है। जैसा खाये अन्न- वैसा बने मन, जैसे पिएं पानी- वैसे बने वाणी।

प्रश्नः-घर में जो हम दीपक जलाते हैं, उसका मुँह भगवान की तरफ होना चाहिए या मनुष्य की तरफ होना चाहिए?

उत्तर: - एक अखंड दीप होता है जिसकी लौ ऊपर की ओर रहती है, जो प्रायः हम जप-साधना के समय उपयोग में लाते हैं, उसमें कोई कन्फ्यूजन नहीं होता । लेकिन जो एक सामान्य दीपक होता है ,जो आरती दिखाते समय भी प्रयोग करते हैं, वहाँ थोड़ी कन्फ्यूजन होती है । सामान्य तौर पर भगवान की तरफ ही रखा जाता है, वैसे किधर भी रखिये, प्रकाश फैलना चाहिए, भगवान का प्रकाश,ज्ञान का प्रकाश सर्वत्र फैलना चाहिए। एक चौमुखी दीपक होता है, जिसे मंगल दीप कहते हैं, मांगलिक कार्यों में उसका प्रयोग होता है, चारों दिशा में चार बाती डालकर, विवाह संस्कार का क्रम किया जाता है। पर इन सब बातों का कोई मतलब नहीं है, सोमनाथ का मंदिर लूटा जाता रहा, पंडित सब बहस करते रहे कि टट्टी के समय, शौच के समय लोटा बाईं ओर रखें या दाएँ रखें, इन सब बातों का कोई मतलब नहीं है। जो विधि होती है उसमें दो बातें होती है- एक तो भ्रम होता है, दूसरा विधि में कहीं ना कहीं मानवोचित न्यूनता रहती है यानी कमी रहती है। उस कमी की पूर्ति आपकी श्रद्धा से होती है, आपके विश्वास से होता है, आपके समर्पण से होता है। आप ये कभी मत समझें कि सिर्फ विधि संपूर्ण कर लेंगे तो भगवान हम पर प्रसन्न हो जाएंगे, आप श्रद्धा संपूर्ण कर लें तो आपको भगवान की कृपा जरूर मिलेगी। आपका भरोसा, आपकी भक्ति, आपका प्रेम, आपकी निष्ठा, आपकी आस्था यह आपके सभी विधियों की कमियों को पूरा कर देगी।

प्रश्नः-नागरिकता क्या है? आज नागरिकता का क्या अर्थ है?

उत्तर: - नागरिकता ये है कि आप नगर में रहने लायक हो। ठीक से रहना आता है आपको, खाना-पीना आता है आपको, ठीक से व्यवहार करना आता है आपको। और हर नागरिक का कर्तव्य है कि जीयो और जीने दो। नागरिकता का सामान्य अर्थ है सभ्यतापूर्वक जीना, पहनना, खाना, सोना, रहना, साफ- सफाई, सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखना। सड़क पर कूड़ा फेंकना, ट्रैफिक नियम का पालन नहीं करना, लाइन तोड़कर आगे बढ़ जाना, ये अच्छे नागरिक का लक्षण नहीं है। तो नियमों को मानें, आप टैक्स देने की स्थिति में हैं तो टैक्स जरूर दें। नागरिकता का मतलब है समाज के साथ समरसता और सामंजस्य पूर्वक जीना। पड़ोसी ने गड़बड़ की, पर आप गड़बड़ न करें। मेरे भेंस को डंडा क्यों मारा, वाली मनःस्थिति में न जीयें। सहजीवन पद्धति नागरिकता है।

प्रश्नः-क्या बेड पर भोजन करने से बुरे सपने आते हैं?

उत्तर: - आ भी सकते हैं और नहीं भी आ सकते हैं। ज़रूरी तो नहीं है बिस्तर पर भोजन करना। मुख्य बात है साफ-सफाई, करीने से रहना, जीना। अब बीमार है, तो उसके लिए क्या करेंगे? बिस्तर पर ही भोजन देना पड़ेगा। सपने न आवे, इसके लिए बिस्तर का भी साफ रहना जरूरी है और शरीर का भी साफ-सुथरा रखना जरूरी है, पैर-हाथ, चेहरा धोकर बाईं करवट सोएं, सपने नहीं आएँगे।

प्रश्न:-स्टूडेंट अपने प्रॉब्लम का सॉल्यूशन नहीं कर पाता है..... एनी सॉल्यूशन?

उत्तर: - अरे भाई! अपने प्रॉब्लम को आप नहीं बताएंगे तो सॉल्यूशन कहाँ से ढूंढ पाएंगे? अपनी समस्या बताएंगे तभी तो समाधान मिलेगा, मार्गदर्शन मिलेगा। अपनी समस्या ,अपने मार्गदर्शक के सामने रखनी होगी ,तो मार्गदर्शक अपनी बुद्धि-विवेक के अनुसार उसका समाधान सुझाएगा।

प्रश्न:-सर! पैसा ही सब कुछ है?

उत्तर: - सब कुछ नहीं है पर बहुत कुछ है। जीवन है, शरीर है, मन है तो हमें साधन भी चाहिए, इसलिए धन भी चाहिए, हम धन को नकार दें तो उससे तो बात नहीं बनेगी और धन को स्वीकार करके कुछ भी करते रहें तो उससे जीवन ही नष्ट हो जाएगा। तो धन जीवन के संरक्षण- पोषण के लिए है, जीवन के विनाश के लिए नहीं है। तो अपने जीवन की रक्षा के लिए, अपने सद्गुणों को विकसित कर मनुष्य को धन अर्जित करना चाहिए। अपनी क्षमता का विकास करके, अपनी प्रतिभा का विकास करके, अपनी योग्यता का विकास करके धन का अर्जन करना चाहिए। हमेशा ध्यान रखें, जीवन के पोषण और रक्षण के लिए धन कमाना चाहिए, नाश के लिए नहीं कमाना चाहिए, धन आ जाए तो दुर्गुण, दुर्व्यसन विकसित नहीं करना चाहिए। इसलिए दीपावली में लक्ष्मी के साथ गणेश का पूजन होता है, गणेश बुद्धि-विवेक के देवता हैं, विवेकपूर्वक धन कमाएं और खर्च करें।

प्रश्न:-प्रेम का सही अर्थ क्या है?

उत्तर: - प्रेम का सही अर्थ है प्रसन्न रहना और प्रसन्नता प्रदान करना ।औरों को प्रसन्न रखो और प्रसन्न रहो, आप जिसको प्रेम करते हो उसे प्रसन्न रखो और आप खुद भी प्रसन्न रहो। लेकिन आज तो जो प्रेम करते हैं न खुश रहते हैं न खुश रखते हैं।

प्रश्न:-फैमिली मैटर्स का क्या करें?

उत्तर: - देखिये, परिवार में बहुत सारे सदस्य होते हैं, सबकी अपनी-अपनी प्रकृति है, अपना-अपना स्वभाव है ।अपनी प्रकृति के अनुसार जीव आचरण करता है, सुधरता कोई नहीं है, बस तालमेल बिठाएँ। बेकार की डिस्कशन में न फंसें, समय और ऊर्जा बचा कर अन्य कंस्ट्रक्टिव वर्क करें। अगर आप विद्यार्थी हैं, घर में कोई समस्या है तो फिज़िकली प्रजेंट रहें, बहुत ज्यादा मेंटली इन्वोल्व न हों, पढ़ाई के टेबुल पर सिर्फ पढ़ाई को सोचें। नहीं तो आज पांच प्रॉब्लम है घर में,पांच साल बाद आप छठा प्रॉब्लम बन जाएंगे। विद्यार्थी जीवन में पढ़ाई ही एकमात्र अस्त्र है, जो आपको सक्षम बनाएगा, सक्षम बनने के बाद आप घर के प्रॉब्लम को सॉल्व कर पाएंगे।

प्रश्न:-नित्य पूजा क्यों करे और कैसे करना चाहिए?

उत्तर: - जैसे प्रतिदिन बर्तन मांजा जाता है, रोज़ नहाया जाता है, उसी तरह रोज़ पूजा करनी चाहिए ।पूजा- पाठ का मतलब है मन का स्नान। जैसे आप शरीर को साफ करते हैं, नहाते-धोते हैं, उसी तरह मन को भी नहला-धुला लें। जहाँ आपकी श्रद्धा हो, वहाँ समर्पित भाव से पूजा करें। जहाँ मन रमे उसी की उपासना करें।

प्रश्न:-जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है?

उत्तर: - जीवन, जीवन ही सबसे सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। जीवन की अवहेलना न करें, जीवन आपको सब कुछ दे देगा। इसलिए आपको जीवन जीना सीखना चाहिए। जीवन जीने की साधना करें। जीवन साधना ऐसे करें, जीवन ऐसे जीएँ कि शरीर स्वस्थ रहे, मन प्रसन्न रहे, शरीर भी स्वच्छ रहे और मन भी स्वच्छ रहे। वैसे पूजा-पाठ, जीवन जीना

सीखने में मदद करता है, क्योंकि जीवन का केंद्रबिंदु आत्मा है, परमात्मा है, उससे परिचय हो जाए तो उससे प्रार्थना कर लें, थोड़ा उससे भी आलोक प्राप्त कर लें। जीवन में जीवन से ज्यादा जरूरी कुछ भी नहीं है। जीवन की अवहेलना करके आप कुछ नहीं कर पाएंगे। जीवन की अवहेलना का मतलब है नशा कर लिया, दारू पी लिया, कहीं भी कुछ भी खा लिया, फिर शरीर बीमार हो गया । निरर्थक बैठकर समय बर्बाद कर रहे हैं, ये सब जीवन की अवहेलना है। पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य कहते हैं- जीवन का अर्थ है समय, जो जीवन से प्यार करते हैं, वे आलस्य में समय न गंवाए।

प्रश्नः-सत्य का आचरण कैसे करें?

उत्तरः - सत्य का एक अर्थ होता है-सदाशयता । आपका इंटेन्शन सही होना चाहिए, मकसद सही होना चाहिए। सत्य बोलने में किसी का नुकसान न हो, यह हमेशा ध्यान रखना चाहिए। यही सत्य का आचरण है।

प्रश्नः-सर ! यहाँ संस्कृत की क्लास होनी चाहिए क्योंकि भारत की भाषा तो संस्कृत है, विश्व की सभी भाषाओं की जननी है।

उत्तरः - यहाँ शनिवार-रविवार की क्लास शाम में संस्कृत भी पढ़ाई जाती है, कर्मकांड सिखाया जाता है । हाँ ! वह लाइव नहीं होता है। भारत की सभी भाषाओं की जननी, विश्व की सभी भाषाओं की जननी संस्कृत ,यह सही है, लेकिन संस्कृति की जननी कौन है? संस्कृत की जननी संस्कृति है, हम लोग संस्कृति तो पढ़ाते ही हैं, सिखाते ही हैं । ये सब चीजें जो यहाँ चल रही है ये सब संस्कृति है। जब भारत में संस्कृति आई तो संस्कृत भी पैदा हो गई। यदि आपने भारत की संस्कृति सीख ली तो एक दिन संस्कृत का भी मर्म और अर्थ जान जाएंगे ।

प्रश्नः-व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में जो बताया जाता है और उससे जो गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के बच्चों से प्रश्न पूछा जाता है ,उसका उत्तर क्या दें? क्योंकि इस कक्षा में बहुत सारी बातें बताई जाती है, उत्तर कैसे लिखें, यूट्यूब में भी उत्तर नहीं मिलता है। किस टॉपिक पर उतर दें, हर बार यह छूट जाता है।

उत्तरः - इसका मतलब है कि आप सही तरीके से सुन नहीं पा रहे हैं, समझ नहीं पा रहे हैं। नहीं समझ में आता है तो फिर पूछ लें । दूसरी बात, लिखे-लिखाए उत्तर के बजाय आपके विचार जब उत्तर देने लगेंगे तो वो उत्तर ज्यादा सार्थक उत्तर होंगे। प्रश्न पूछने का उद्देश्य सिर्फ इतना ही है कि आपकी विचारशीलता जगे, आप सोचना सीख जाएं, पढ़ना लिखना तो सीख चुके हैं, सोचना सीखना है । जिस दिन आपकी सोच उत्तर देने लगी न, उस दिन यह कक्षा सार्थक हो जाएगी।

प्रश्नः- माँ गायत्री का अवतरण कैसे हुआ?

उत्तरः - विश्वामित्र ऋषि की तपस्या पूरी हुई, उनको प्रकाश की आवश्यकता थी, भगवान से प्रकाश की आकांक्षा कर रहे थे, तो उन्हें जीवन जीने का मार्गदर्शन मंत्र मिला, तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात् । ये मंत्र जो है जीवन का मंत्र है। तत्सवितुर्वरेण्यं है प्रकाश का वरण, भर्गो देवस्य धीमहि है प्रकाश का धारण, धियो यो नः प्रचोदयात् है प्रकाश की ओर गमन । वरण, धारण, गमन यानि हम प्रकाशित मार्ग पर चलें। सूरजमुखी पौधा होता है सूरज की ओर घूमता रहता है, अगर हम कहें कि सूरज का सच्चा उपासक कौन है? गायत्री मंत्र का सच्चा उपासक कौन है? तो सूरजमुखी का पौधा। हमें सूरजमुखी से सीखना चाहिए फिर गायत्री मंत्र का रहस्य भी पता चल जाएगा। धरती पर गायत्री माता का प्रथम परिचय ऋषि विश्वामित्र ने कराया और यहीं से गायत्री मंत्र का आविर्भाव हुआ। इसलिए गायत्री मंत्र के ऋषि विश्वामित्र हैं, विश्वामित्र को समझने की कोशिश करेंगे तो हमें गायत्री मंत्र का मर्म पता चल जाएगा । वैसे पुराण में कहा गया है कि ब्रह्मा की नाभि से ब्रह्मकमल निकला उस पर माँ गायत्री विराजमान थी । इस तरह से उनका अवतरण हुआ । बहुत सारी कथा कहानी है, किंवदंतियां हैं। सरल शब्दों में हमें बस इतना समझना चाहिए की सविता की शक्ति गायत्री है, सावित्री की महाशक्ति का मंत्र इन 24 अक्षरों में हैं, पहली बार इसको अपनी साधना से विश्वामित्र ने धरती पर प्रकट किया, सब से परिचय कराया और बताया कि गायत्री करने का मतलब है प्रकाश के सन्मुख, प्रकाश के अभिमुख हो कर जीवन जीना ।

प्रश्नः- देवी पुराण के तीसरे स्कंध में विष्णु जी ने श्री दुर्गाजी की स्तुति करते हुए कहा-तुम शुद्ध स्वरूपा हो, यह सारा संसार तुम्हीं से उदभाषित हो रहा है, मैं [विष्णु] ब्रह्मा और शंकर, हम सभी तुम्हारी कृपा से ही विद्यमान हैं। हमारा तो आविर्भाव [जन्म] तथा तिरोभाव[मृत्यु] हुआ करता है। प्रश्न ये है कि सृष्टि के पालनहार विष्णु जी का भी जन्म एवं मृत्यु हुआ करता है? और दुर्गा माता जी का जन्म और मृत्यु नहीं होता है?

उत्तरः - प्रश्न दुर्गा माता का नहीं है, प्रश्न आदि माता प्रकृति के उत्पत्ति और पराभव का है। सृष्टि में दो ही तत्व मुख्य हैं- एक प्रकृति है, एक परमात्मा। प्रकृति भी किसी काल में ,किसी अवस्था में परमेश्वर में विलीन हो जाती है। जब प्रकृति जिस परमेश्वर में विलीन हो जाती है, तो उसको कहते हैं परब्रह्म परमात्मा। इसलिए उपनिषद् केवल ब्रह्म की सत्ता की व्याख्या करता है, प्रकृति की सत्ता की व्याख्या नहीं करता। क्योंकि ब्रह्म से प्रकृति है, प्रकृति से ब्रह्म नहीं है। प्रकृति में जो भी संरचना है- धरती हो, आकाश हो, पाताल हो, लोक-लोकांतर हो, चाहे पशु, पक्षी, प्राणी हो, चाहे ब्रह्मा, विष्णु, शिव हो, कोई भी देवी-देवता हो,ये सभी प्रकृति से उत्पन्न होने वाली संरचना है। प्रकृति के विधान से उनका जीवन और जन्म हुआ है। सभी के कार्यों का भी निर्धारण हुआ और हरेक अपना कार्य करके प्रकृति में विलीन हो जाता है। हाँ विलीनता का समय अलग-अलग होता है। मच्छर का अलग, हाथी का अलग, कछुए का अलग, मनुष्य का अलग, देवी-देवता का अलग। पर ऐसा कोई नहीं है जो प्रकृति में लीन नहीं होगा।

हम प्रकृति को माँ कहते है, जो जन्म देती है वो माँ होती है, जो सभी को जन्म देती है वो आदिमाता है। जब दुर्गा जी की ये व्याख्या की जाती है कि वो आदि शक्ति है, मूल प्रकृति है तो उस रूप में उनसे सभी ने जन्म पाया है, ब्रह्मा ने भी पाया, विष्णु ने भी पाया, शिव ने भी पाया। अगर हम यह समझे की दुर्गाजी देवी है, तो उन्होंने भी जन्म पाया है, किसी भी कारण से, किसी भी रूप में। ये क्या है? पुराण की एक परंपरा है, जिस पुराण की हम रचना करते हैं, शिवपुराण हो, विष्णु पुराण हो ,गणेश पुराण हो, उस पुराण का जो केंद्रीय तत्व है, उसी को हम आदि कारण मानते हैं सृष्टि का। शिवपुराण में शिव आदि कारण हैं, विष्णु पुराण में विष्णु आदि कारण हैं, गणेश पुराण में गणेश आदि कारण हैं, उसमें तो ये भी कहा गया है शिव-पार्वती की शादी में गणेश जी भी उपस्थित थे, यहाँ गणेशजी का वर्णन आदि कारण के रूप में है, पुत्र के रूप में नहीं है। देवी पुराण में माँ दुर्गा आदिकारण है।इसका गूढ अर्थ क्या है? सृष्टि में सिर्फ एक तत्व की प्रधानता है, एक परम तत्व, परब्रह्म रूप, उसी से प्रकृति, उसी से पूरी सृष्टि। हम दुर्गाजी को कहें, या पुरुष प्रधान देवता को कहें, या प्रकृति प्रधान देवी को कहें, या महालक्ष्मी-महासरस्वती-महाकाली को कहें, या गायत्री को कहें, उन्हें आदि कारण, परम तत्व के रूप में मानते हैं। सिर्फ देवी या देवता के रूप में नहीं मानते हैं, परब्रह्म के रूप में मानते हैं, परमात्मा के रूप में मानते हैं, प्रकृति के रूप में मानते हैं। पुरुष प्रधान तत्व को कहते हैं तो हे परमेश्वर! आप आदि कारण हैं, आप पूर्ण ब्रह्म हैं, और जब प्रकृति प्रधान तत्वों कहते हैं तो हे परमेश्वरी !आप आदि कारण हैं, आपने सभी को जन्म दिया है। तो ये सार तत्व है।

प्रश्नः-भगवान बुद्ध जब उपदेश दे रहे थे ,तो उस समय बोलते हैं भिक्षुओं के सामने ,जो भिक्षु मांस खाना चाहते हैं वह मांस खा सकते है, जो मांस नहीं खाना चाहते हैं वह नहीं खायेंगे ,लेकिन जो मांस खायेंगे वह इस बात का ध्यान रखेंगे कि किसी भी जीव की हत्या ना हो। प्रश्न यह है कि बिना जीव की हत्या किये मांसाहारी भोजन कैसे हो सकता है?

उत्तरः - उस प्रसंग को इस तरह से समझें- जब बुद्ध के बौद्ध भिक्षुक भिक्षाटन के लिए निकले थे, तो उनके भिक्षापात्र में ऊपर से किसी चील ने मांस का टुकड़ा गिरा दिया, तो वह भिक्षुक महात्मा बुद्ध से पूछा कि इसका क्या करें? तो महात्मा बुद्ध ने कहा-भिक्षा में जो भी मिले उसे ग्रहण करना चाहिए, ये चुनना, वो छोड़ना, ऐसा नहीं होना चाहिए, तुमने तो पशु को नहीं मारा, इसलिए ग्रहण करो। अगर पिक एंड चूज का सिद्धांत महात्मा बुद्ध बताते, तो फिर भिक्षुक लोग अच्छा चुनते, स्वादिष्ट खाते, बुरा या रूखा- सूखा छोड़ देते, इसलिए भगवान बुद्ध ने ऐसा कहा। पर विकृति ये हुई, इस वक्तव्य के आधार पर जितने बौद्ध हैं, वो मांसाहारी हो गए। जितनी भी बुद्धिस्ट कंट्री में जाए, वहाँ साइनबोर्ड में लिखा मिलेगा, यहाँ अपने आप मरे हुए पशु का मांस मिलता है, मतलब जीव हत्या नहीं की, मूल मर्म छोड़ दिया, अर्थ का अनर्थ,अपने सुविधा अनुसार निकाल लिया। ज्ञान की अवस्था और अज्ञान की अवस्था में क्या होता है, इस उदाहरण से समझ में आता है। यह विचित्र माया हैं, अज्ञानी, गुरु इसलिए नहीं हो सकता है कि वह अज्ञानी है, और ज्ञानी, गुरु

इसलिए नहीं हो सकता है क्योंकि उसे अज्ञान का बोध नहीं है। ध्यान से समझने की बात है अगर अज्ञानी गुरु होगा तो उसमें कुछ ना कुछ अहम होगा, कुछ अपनी धारणाएं होंगी, वो अपने हिसाब से चलाएगा, अपना मैं लगाएगा, इसलिए गुरु नहीं हो सकता। ज्ञानी इसलिए गुरु नहीं हो सकता है कि वो अच्छे- बुरे के भेद से पार निकल जाता है। ज्ञानी इसलिए गुरु नहीं बन सकता कि वो ज्ञानी है, अज्ञानी इसलिए गुरु नहीं बन सकता कि वो अज्ञानी है। इसका मतलब यह हुआ कि बुद्ध ने जिस भिक्षुक को कहा वहाँ तक तो ठीक है। पर अन्य भिक्षुकों ने इसका क्या मतलब निकाल लिया? बुद्ध ने उस भिक्षु को कहा था कि मरा हुआ मांस मिल गया तो खा ले, तो बुद्ध ने उस भिक्षुक को कहा था, हमको आपको नहीं कहा था। तो समझने की बात ये है कि हर व्यक्ति की व्यवस्था और अवस्था अलग- अलग है, उस अनुसार आचरण करना चाहिए, देखा- देखी नहीं करनी चाहिए और कुतर्क भी नहीं करना चाहिए।

जून माह की गतिविधियाँ

दिनांक 02-06-24 ,को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए प्रखर ने विचारों के महत्व को बताते हुए कहा-विचार परिवर्तन से व्यक्ति, समाज, युग बदल जाता है। दिनेश कुमार दिनकर ने संबोधित करते हुए कहा- भगवान ने परिवर्तन के लिए इस क्षण को चुना है।हमलोग परिवर्तन के महान क्षण से गुजर रहे हैं। उन्होने गायत्री मंत्र के महत्व को बताते हुए कहा-गायत्री मंत्र सद्बुद्धि का मंत्र है बुद्धि को शुद्ध करने का मंत्र है। मनीषा ने संबोधित करते हुए कहा-जिन्दगी को बदलने के लिए स्वभाव भी बदलना चाहिए।

दिनांक 06.06.2024 को के गायत्री शक्तिपीठ बरैल के स्थापना दिवस के अवसर पर 5 कुण्डीय यज्ञ सहरसा के कार्यकर्ताओं द्वारा संपन्न किया गया।

दिनांक 09-06-24 ,व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने विचार और कर्म की सही दिशा का चुनाव के महत्व को बताते हुए कहा- एक प्रश्न सबके मन में उठता है-जब तक बुद्ध, महावीर की तरह अंदर से नहीं हो जाएंगे तबतक जरूरत की चिंता जरूर सताएगी। पं0पुज्य गुरुदेव कहते हैं, जरूरत एक भ्रांति है,फिर भी जरूरत की चिंता हम करते हैं।सच ये है जीवन की 99% घटनाएँ आपके इच्छा के बिना घटित होती है।क्या जरूरत आपकी ईच्छा के विना पूरी होगी।अगर वो जरूरत है तो जरूर पूरी होगी।फिर भी हम चिंता क्यों करते हैं।चिंता मात्र अहंकार और अज्ञान के कारण होती है।जब आप चिंता करते हैं मैं हूं,इसका मतलब प्रकृति और परमात्मा आपका पोषण करने में असमर्थ है।वो आपकी चिंता नहीं कर रहे हैं,भगवान पर आपको अविश्वास है।चिंता का मूल कारण अभिमान और अज्ञान है।भगवान ने मनुष्य का जीवन दिया है अपना कर्म भलीभांति करना चाहिए, बुद्धिमत्ता से कर्म करना चाहिए; अपने धर्म का पालन करना चाहिए। धर्म है प्रकृति के नियमों का पालन। इस अवसर पर आरती- ए डी एम खगड़िया, शशांक-सिविल जज,खगड़िया ,पूनम-सहायक प्रोफेसर ईन्जीनियरिंज कालेज सहरसा उपस्थित थे। इनका सम्मान तिलक लगाकर मंत्र दुपट्टा से सम्मानित किया गया आरती ने युवाओं से कहा-सफलता की यात्राा में स्पष्ट मार्गदर्शन डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल से मिला।गायत्री मां का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। यहां आकर मैं बहुत खुश हूं। शशांक ने कहा-मेहनत और लगन से सफलता प्राप्त होगी। पूनम ने कहा- व्यक्तित्व परिष्कार सत्र से बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा 16/06/2024 गायत्री जयंती, गंगा दशहरा एवं पूज्य गुरुदेव का महाप्रयाण दिवस का विशिष्ट पूजन हुआ एवं सायं कालीन कार्यक्रम में दीप यज्ञ एवं पूर्णाहुति संपन्न हुई। इस अवसर पर डॉक्टर अरूण कुमार जायसवाल जी ने कहा गायत्री युग शक्ति है। इसके माध्यम से ही विचार क्रांति होगी। विचारों के बदलने का अभियान है विचार क्रांति। ज्ञान की गंगा गायत्री को जन-जन में पहुँचाने के लिए सभी गायत्री परिजन संकल्पित हुए।

गायत्री जयंती, गंगा दशहरा एवं पूज्य गुरुदेव का महाप्रयाण दिवस का विशिष्ट पूजन हुआ एवं सायं कालीन कार्यक्रम में दीप यज्ञ एवं पूर्णाहुति संपन्न हुई।

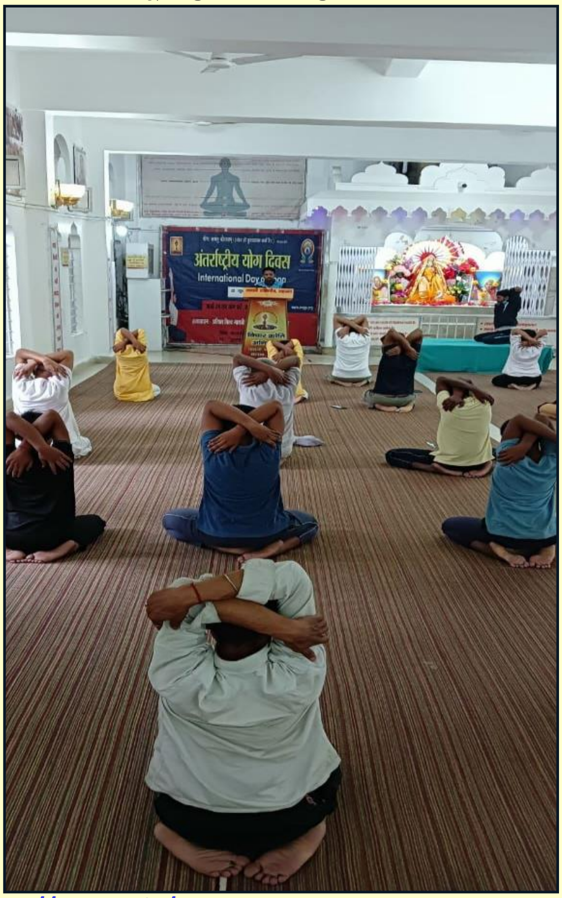

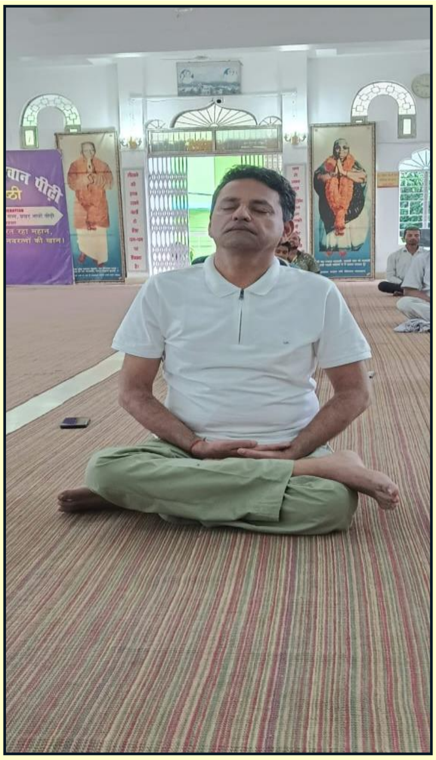

दिनांक 23 /6 /2024 रविवार को गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में रविवासरीय कार्यक्रम का शुभारंभ रुद्राभिषेक, हवन यज्ञ एवं विभिन्न संस्कार से किया गया। साथ ही व्यक्तित्व परिष्कार सत्र की शुरुआत गान, ज्ञान और ध्यान से किया गया। इस क्रम में सत्र को संबोधित करते हुए गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के मुख्य ट्रस्टी डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल जी ने कहा : इस जीवन में बिना संघर्ष किए, बिना कष्ट उठाए, कोई व्यक्ति आगे नहीं बढ़ सकता । जो तपेगा वही निखरेगा। हमारी शिक्षण प्रणाली कैसी होनी चाहिए ।इस पर उन्होंने चर्चा की। शिक्षा में क्या-क्या होना चाहिए। पहला: शिक्षक, दूसरा: शिक्षार्थी, तीसरा: शिक्षक प्रणाली और चौथा: शैक्षणिक वातावरण। अगर यह सब हो तो ही शिक्षा व्यवस्था सुद्दढ़ हो पाएगी। इन सब में सब कुछ होने के बाद अगर शैक्षणिक वातावरण ना हो तो शिक्षा व्यवस्था सुद्दढ़ नहीं हो पाएगी। उन्होंने कहा: सबसे अधिक महत्वपूर्ण वातावरण का होना है। आज जीवन मूल्य संकट में है। विश्वास का संकट खड़ा हो रहा है। यह वातावरण का ही प्रभाव है कि एक समय श्री अरविंद, भगत सिंह, विवेकानंद, महात्मा गांधी जैसे महामानव भी हुए। शिक्षक हमेशा प्रेरक होते हैं। वह माता-पिता होते हैं। जन्म से सब शुद्र होते हैं, संस्कारों से द्विज होते हैं।एक शिक्षक ही हमें द्विज बनाते हैं ।शिक्षा हमें द्विज बनाती है। अगर शिक्षा दूसरा जन्म देने में सक्षम है तो ही शिक्षा सार्थक है। सुगढ़ हमें शिक्षक बनाते हैं, शिक्षा प्रणाली बनाती है। शिक्षा व्यवस्था बनाती है। हम व्यक्ति के रूप में जन्म लेते हैं, किंतु शिक्षा हमें व्यक्तित्व देती है ।अगर शिक्षक, शिक्षा प्रणाली और शैक्षणिक वातावरण सही ढंग से मिल जाए तो शिक्षार्थी के व्यक्तित्व का निर्माण हो जाता है। लेकिन आज हम शिक्षा का मूल्यांकन करते हैं, उपलब्धियों का मूल्यांकन करते हैं,व्यक्तित्व का मूल्यांकन नहीं करते। शिक्षक का व्यक्तित्व भी शैक्षणिक वातावरण बनाता है। आज शिक्षक, शिक्षार्थी और शैक्षणिक प्रणाली में द्वेष भर गया है। जब तक यह सब नहीं ठीक होगा, शिक्षा व्यवस्था सुद्दढ़, सुगढ़ नहीं बन पाएगी । इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ के प्रजामंडल युवा मंडल युवती मण्डल और महिला मंडल मौजूद थे।

उप जोन गोष्ठी के अवसर पर आए खगड़िया कोर्ट के सिविल जज कमल कुमार जी, ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि छात्र जीवन में पढ़ाई पर विशेष ध्यान दें।अपनी आदतों को सुधारें, आदतें हमारे भविष्य का निर्माण करती हैं...धर्म और विज्ञान दोनों को साथ ले कर चलें....

दिनांक 23 जून 2024 (रविवार) को गायत्री शक्तिपीठ, खगड़िया में आयोजित उप-जोन गोष्ठी में उपस्थित परिजनों को संबोधित करते हुए उपजोन समन्वयक डॉक्टर अरुण कुमार जयसवाल जी....

शुभारम्भ दीप प्रज्वलन से...

युवाओं को संबोधित करते हुए

युवा उत्कर्ष कार्यक्रम में कमल कुमार सिविल जज, खगड़िया

सामूहिक देव स्थापना

पौधा वितरण करते अतिथिगण

रोज़ाना अन्नदान-महादान....गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

गायत्री कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान के बच्चे का साप्ताहिक परीक्षा लेते हुए....

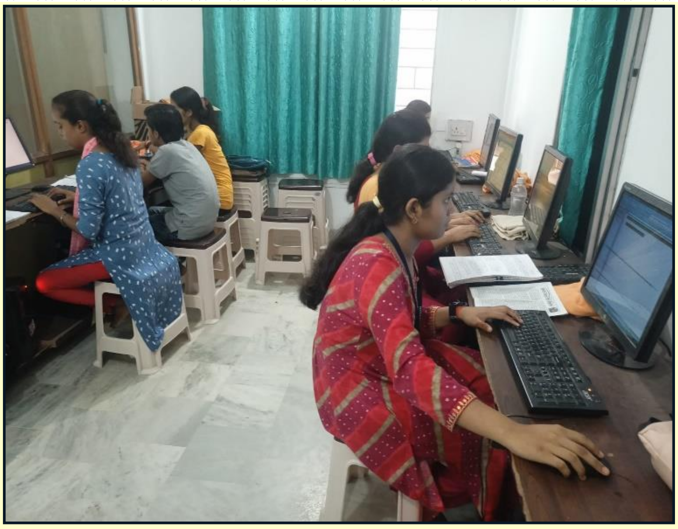

गायत्री कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान के बच्चें को थ्योरी क्लास कराते हुए .....

गायत्री कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान के बच्चें को ms word का practical कराते हुए.....

प्रत्येक महीने के अंतिम रविवार की तरह दिनांक 30/06/2024 (रविवार) को सहरसा जिला के बनमा इटहरी; प्रखंड के अंतर्गत तैलिया हाट , सरवैला , हथमंडल तथा इटहरी में 24 अलग- अलग नए घरों में देव स्थापना एवं एक कुंडीय गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराया गया। साथ ही, गुरुदेव के विचारों को अखण्ड ज्योति पत्रिका एवं दीवार लेखन के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया गया।जिसमें गायत्री परिवार सहरसा के युवा मंडल, युवती मंडल, महिला मंडल एवं प्रज्ञा मंडल के सक्रिय कार्यकर्ताओं ने अहम भूमिका निभाई।

अखंड ज्योति पत्रिका वितरण करते हुए परिजन

गायत्री मंदिर सहरसा में आज हवन के साथ साथ विभिन्न संस्कार भी संपन्न हुए....

विद्यारंभ संस्कार

अन्नप्रशान संस्कार

पुस्पन संस्कार

संस्कार के बाद आशीर्वाद...

दैनिक समाचार पत्रो में गायत्री शक्तिपीठ सहरसा की छपी खबरें

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित

चिंता मात्र अहंकार और अज्ञान के कारण होती है : डॉ अरुण कुमार जायसवाल

मीडिया दर्शन/सहरसा। गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया।व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डा अरुण कुमार जायस-वाल ने विचार और कर्म की सही दिशा का चुनाव की महत्व को बताते हुए कहा एक प्रश्न सबके मन में उठता है जबतक बुद्ध, महावीर की तरह अंदर से नहीं हो जाएंगे तबतक जरूरत की चिंता जरूर सताएगी।पं पुज्य गुरुदेव कहते है, जरूरत एक भ्रांति है,फिर भी जरूरत की चिंता हम करते हैं।सच ये है जीवन की 99% घटनाएं आपके इच्छा के बिना घटित होती है।क्या जरूरत आपकी ईच्छा के बिना पूरी होगी।अगर वो जरूरत है तो जरूर पूरी होगी।फिर भी हम चिंता क्यो करते हैं।चिंता मात्र अहंकार और अज्ञान के कारण होती है।जब आप चिंता करते हैं मैं हूं।इसका मतलब प्रकृति और पर-मात्मा आपका पोषण करने में असमर्थ है।वो आपकी चिंता नहीं कर रहे हैं,भगवान पर आपको अविश्वास है।चिंता का मूल कारण अभिमान और अज्ञान है।भगवान ने मनुष्य का जीवन दिया है अपना कर्म भलीभांति करना चाहिए।बुद्धिमत्ता से कर्म करना चाहिए।अपना धर्म का पालन करना चाहिए। धर्म है प्रकृति के नियमों का पालन।उन्होंने बताया कि 16 जून को शक्तिपीठ में गंगा दशहरा, गायत्रीजयन्ती एवं पं पुज्य गुरुदेव का महाप्रयाण दिवस मनाया जाएगा। इस अवसर पर आरती ए डी एम खगड़िया,शशांक-सिविल जज,खगड़िया,पूनम-सहायक प्रोफेसर ईन्जीनियरिंज कालेज उपस्थित थे।इनका सम्मान तिलक लगाकर मंत्र दुपट्टा से सम्मानित किया गया।वही आरती ने युवाओं से कहा-सफलता की यात्राा में स्पष्ट मार्गदर्शन डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल से मिला।गायत्री मां का आशीर्वाद प्राप्त हुआ।यहां आकर मैं बहुत खुश हूं।शशांक ने कहा-मेहनत और लगन से सफलता प्राप्त होगी।पूनम ने कहा- व्यक्तित्व परिष्कार सत्र से बहुत कुछ सीखने की मिलता है।

का तापमान बढ़ रहा है वो पूरे ...

मात्र अहंकार और अज्ञानता के कारण होती है चिंता : डा. अरुण

संबोधित करते ट्रस्टी • सौजन्य : शक्तिपीठ

संस, जागरण • सहरसा : रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए ट्रस्टी डा. अरुण कुमार जायसवाल ने विचार और कर्म की सही दिशा का चुनाव के महत्व पर प्रकाश डाला। कहा कि एक प्रश्न सबके मन में उठता है कि जबतक बुद्ध, महावीर की तरह अंदर से मजबूत नहीं हो जाएंगे तब तक जरूरत की चिंता जरूर सताएगी। गुरुदेव कहते है, जरूरत एक भ्रांति है, फिर भी जरूरत की चिंता हम करते हैं। सच यह है कि जीवन की 99 प्रतिशत घटनाएं आपकी इच्छा के बिना घटित होती है।

क्या जरूरत आपकी इच्छा के बिना पूरी होगी। अगर वह जरूरत है, तो जरूर पूरी होगी। फिर भी हम चिंता क्यों करते हैं। चिंता मात्र अहंकार और अज्ञान के कारण होती है। कहा कि जब आप चिंता करते हैं मैं हूं, इसका मतलब प्रकृति और परमात्मा आपका पोषण करने में असमर्थ हैं। वो आपकी चिंता नहीं कर रहे हैं,भगवान पर आपको अविश्वास है। चिंता का मूल कारण अभिमान और अज्ञान है। उन्होंने कहा कि भगवान ने मनुष्य का जीवन दिया है। अपना कर्म भलीभांति करना चाहिए, बुद्धिमत्ता से कर्म करना चाहिए।

चिंता मात्र अहंकार और अज्ञान के कारण होती है : डॉ अरुण

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित

अंग भारत,सहरसा। गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया।व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डा अरुण कुमार जायसवाल ने विचार और कर्म की सही दिशा का चुनाव की महत्व को बताते हुए कहा एक प्रश्न सबके मन में उठता है जबतक बुद्ध, महावीर की तरह अंदर से नहीं हो जाएंगे तबतक जरूरत की चिंता जरूर सताएगी। पं पुज्य गुरुदेव कहते है, जरूरत एक भ्रांति है,फिर भी जरूरत की चिंता हम करते हैं।सच ये है जीवन की 99% घटनाएं आपके इच्छा के बिना घटित होती है।क्या जरूरत आपकी ईच्छा के बिना पूरी होगी।अगर वो जरूरत है तो जरूर पूरी होगी।फिर भी हम चिंता क्यो करते हैं।चिंता मात्र अहंकार और अज्ञान के कारण होती है।जब आप चिंता करते हैं मैं हूं।इसका मतलब प्रकृति और परमात्मा आपका पोषण करने में असमर्थ है।वो आपकी चिंता नहीं कर रहे हैं,भगवान पर आपको अविश्वास है।चिंता का मूल कारण अभिमान और अज्ञान है।भगवान ने मनुष्य का जीवन दिया है अपना कर्म भलीभांति करना चाहिए। बुद्धिमत्ता से कर्म करना चाहिए।अपना धर्म का पालन करना चाहिए।

धर्म है प्रकृति के नियमों का पालन।उन्होंने बताया कि 16 जून को शक्तिपीठ में गंगा दशहरा, गायत्री जयन्ती एवं पं पुज्य गुरुदेव का महाप्रयाण दिवस मनाया जाएगा। इस अवसर पर आरती एडीएम खगड़िया, शशांक-सिविल जज, खगड़िया, पूनम-सहायक प्रोफेसर ईन्जीनियरिंज कालेज उपस्थित थे।इनका सम्मान तिलक लगाकर मंत्र दुपट्टा से सम्मानित किया गया।वही आरती ने युवाओं से कहा-सफलता की यात्रा में स्पष्ट मार्गदर्शन डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल से मिला। गायत्री मां का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। यहां आकर मैं बहुत खुश हूं। शशांक ने कहा-मेहनत और लगन से सफलता प्राप्त होगी।

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का किया गया आयोजन

सोनभद्र संवाददाता, सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया। व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डा अरुण कुमार जायसवाल ने विचार और कर्म की सही दिशा का चुनाव की महत्व को बताते हुए कहा एक प्रश्न सबके मन में उठता है जबतक बुद्ध, महावीर की तरह अंदर से नहीं हो जाएंगे तबतक जरूरत की चिंता जरूर सताएगी।

पं पुज्य गुरुदेव कहते है, जरूरत एक भ्रांति है,फिर भी जरूरत की चिंता हम करते हैं।सच ये है जीवन की 99 प्रतिशत घटनाएं आपके इच्छा के बिना घटित होती है। क्या जरूरत आपकी ईच्छा के बिना पूरी होगी। अगर वो जरूरत है तो जरूर पूरी होगी। फिर भी हम चिंता क्यो करते हैं।चिंता मात्र अहंकार और अज्ञान के कारण होती है। जब आप चिंता करते है मैं हूं। इसका मतलब प्रकृति और परमात्मा आपका पोषण करने में असमर्थ है। वो आपकी चिंता नहीं कर रहे हैं,भगवान पर आपको अविश्वास है। चिंता का मूल कारण अभिमान और अज्ञान है। भगवान ने मनुष्य का जीवन दिया है अपना कर्म भलीभांति करना चाहिए। बुद्धिमत्ता से कर्म करना चाहिए।अपना धर्म का पालन करना चाहिए। धर्म है प्रकृति के नियमों का पालन। उन्होंने बताया कि 16 जून को शक्तिपीठ में गंगा दशहरा, गायत्री जयन्ती एवं पं पुज्य गुरुदेव का महाप्रयाण दिवस मनाया जाएगा। इस अवसर पर एडीएम खगड़िया आरती, सिविल जज खगड़िया शशांक, इंजीनियरिंग कॉलेज के सहायक प्रोफेसर पूनम उपस्थित थे। इनका सम्मान तिलक लगाकर मंत्र दुपट्टा से सम्मानित किया गया। वही आरती ने युवाओं से कहा कि सफलता की यात्राा में स्पष्ट मार्गदर्शन डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल से मिला। गायत्री मां का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। यहां आकर मैं बहुत खुश हूं। शशांक ने कहा कि मेहनत और लगन से सफलता प्राप्त होगी। पूनम ने कहा कि व्यक्तित्व परिष्कार सत्र से बहुत कुछ सीखने की मिलता है।

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का किया आयोजन

सहरसा/संवाददाता। गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया। व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डा अरुण कुमार जायसवाल ने विचार और कर्म की सही दिशा का चुनाव की महत्व को बताते हुए कहा एक प्रश्न सबके मन में उठता है जबतक बुद्ध, महावीर की तरह अंदर से नहीं हो जाएंगे तबतक जरूरत की चिंता जरूर सताएगी। पं पुज्य गुरुदेव कहते है, जरूरत एक भ्रांति है,फिर भी जरूरत की चिंता हम करते हैं।सच ये है जीवन की 99 प्रतिशत घटनाएं आपके इच्छा के बिना घटित होती है। क्या जरूरत आपकी ईच्छा के बिना पूरी होगी। अगर वो जरूरत है तो जरूर पूरी होगी। फिर भी हम चिंता क्यो करते हैं।चिंता मात्र अहंकार और अज्ञान के कारण होती है। जब आप चिंता करते है मैं हूं। इसका मतलब प्रकृति और परमात्मा आपका पोषण करने में असमर्थ है। वो आपकी चिंता नहीं कर रहे हैं,भगवान पर आपको अविश्वास है। चिंता का मूल कारण अभिमान और अज्ञान है। भगवान ने मनुष्य का जीवन दिया है अपना कर्म भलीभांति करना चाहिए। बुद्धिमत्ता से कर्म करना चाहिए। अपना धर्म का पालन करना चाहिए। धर्म है प्रकृति के नियमों का पालन। उन्होंने बताया कि 16 जून को शक्तिपीठ में गंगा दशहरा, गायत्री जयन्ती एवं पं पुज्य गुरुदेव का महाप्रयाण दिवस मनाया जाएगा। इस अवसर पर एडीएम खगड़िया आरती, सिविल जज खगड़िया शशांक, इंजीनियरिंग कॉलेज के सहायक प्रोफेसर पूनम उपस्थित थे।

गायत्री जयंती व गंगा दशहरा पर किया गया विशेष पूजन

सोनभद्र कार्यालय, सहरसा। स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को मां गायत्री जयन्ति एवं गंगा दशहरा का विशेष पूजन किया गया। इस अवसर पर डा अरुण कुमार जायसवाल ने कहा गंगा देवलोक से शिव की जटाओं से होती हुई भगीरथ के तप के फलस्वरूप धरती पर आई थी। उन्होने कहा आज के ही दिन अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक पंडित श्री राम शर्मा आचार्य अपने इह लीला को अपनी इच्छा से गायत्री माता के ब्राह्मी चेतना में समा गए। आज गायत्री जयन्ति, गंगा दशहरा एवं पं पुज्य गुरुदेव का महाप्रयाण दिवस है। सभी इस महत्व को समझें। इस अवसर पर गायत्री माता, गंगा माता एवं पं पुज्य गुरुदेव का पूजन विधि-विधान पूर्वक किए गए। डा जायसवाल ने कहा-गायत्री युग शक्ति है। शक्ति यानी क्रिया, उर्जा एवं शक्ति का श्रोत है। इसके माध्यम से हीं विचार क्रांति होगी। विचारों को बदलने का अभियान है। विचार क्रांति और विचार बदलेगी गायत्री मंत्र के जप से।युग को बदलने के लिए ज्ञान की गंगा गायत्री को जन-जन तक पहुंचाने के लिए आज के पावन अवसर पर हम सभी गायत्री परिजन संकल्पित हैं।अज्ञान आभाव को दूर करने का एक ही मंत्र गायत्री मंत्र है।

हमसबों के उद्धार के लिए मां गंगा का धरती पर हुआ है अवतरण

संस, जागरण • सहरसा: रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में मां गायत्री जयंती, गंगा दशहरा एवं पूज्य गुरुदेव का महाप्रयाण दिवस का आयोजन हुआ। मां गायत्री जयंती, एवं गंगा दशहरा को लेकर विशेष पूजन किया गया। इस अवसर पर शक्तिपीठ के ट्रस्टी डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि गंगा देवलोक से शिव की जटाओं से होती हुई भगीरथ के तप के फलस्वरूप धरती पर पहुंची। गंगा महाराजा सगर के सात हजार पुत्रों के उद्धार के लिए ही नहीं बल्कि हम सभी के उद्धार के लिए भी आई थी। जब गंगा धरती पर आई थी, तब कृषि कार्य अच्छे से हो पाई।

उन्होंने कहा- आज गायत्री जयंती, गंगा दशहरा एवं परम पूज्य गुरुदेव का महाप्रयाण दिवस है। सभी इस महत्व को समझें। गायत्री युग शक्ति है। शक्ति यानि क्रिया, ऊर्जा एवं शक्ति का श्रोत है। विचारों को बदलने का अभियान है। गायत्री को जन-जन तक पहुंचाने के लिए आज के पावन अवसर पर हम सभी गायत्री परिजन संकल्पित हैं।

संबोधित करते ट्रस्टी • सौजन्य: शक्तिपीठ

कार्यक्रम • गायत्री शक्तिपीठ में गायत्री जयंती, गंगा दशहरा और आचार्य महाप्रयाण दिवस मना

विचारों को बदलने, अज्ञानता को दूर करने के लिए गायत्री मंत्र की साधना अनिवार्य, यह मंत्र युग परिवर्तन का आधार: डॉ. जायसवाल

भास्कर न्यूज़ | सहरसा

गायत्री युग शक्ति है। इसके माध्यम से ही विचार क्रांति होगी। विचारों को बदलने का अभियान है विचार क्रांति और विचार बदलेगी गायत्री मंत्र के जप से। अज्ञान एवं भाव को दूर करने का एक ही मंत्र है और वह है गायत्री मंत्र। मानवीय चेतना को परिष्कृत करने का मंत्र गायत्री मंत्र है। ये बाते डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने रविवार को गायत्री जयंती, गंगा दशहरा एवं आचार्य श्री राम शर्मा के महाप्रयाण दिवस पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि युग को बदलने के लिए ज्ञान की गंगा गायत्री को जन-जन तक पहुंचाने के लिए आज के पावन अवसर पर हम सभी गायत्री परिजन संकल्पित हैं। उन्होंने कहा कि गुरुदेव कहते थे कि गायत्री मंत्र की साधना अनिवार्य है। गायत्री मंत्र युग परिवर्तन का आधार है।

डॉ. जायसवाल ने कहा कि गंगा देवलोक से शिव की जटाओं से होती हुई भगीरथ के तप के फलस्वरूप धरती पर आई थी। उन्होंने कहा कि गंगा सिर्फ महाराजा सगर के सात हजार पुत्रों के उद्धार के लिए हीं नहीं अपितु हम सभी के उद्धार के लिए भी आई थी। जब गंगा धरती पर आई तब जाकर कृषि कार्य अच्छे से हो पाई। आज ही के दिन अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक पंडित श्री राम शर्मा आचार्य अपने इह लीला को अपनी इच्छा से गायत्री माता के ब्राह्मी चेतना में समा गए। आज गायत्री जयंती, गंगा दशहरा एवं पूज्य गुरुदेव का महाप्रयाण दिवस है।

गायत्री जयंती, गंगा दशहरा और आचार्य महाप्रयाण दिवस पर बोलते डॉ. अरुण जायसवाल व मौजूद श्रद्धालु।

कार्यक्रम के दौरान विधि विधान से की गई पूजा

इस अवसर पर गायत्री माता, गंगा माता एवं गुरुदेव का पूजन विधि-विधान पूर्वक किए गए। इस अवसर पर शक्तिपीठ में सुबह 5.30 बजे प्रातःकालीन रुद्राभिषेक, 6. 30 बजे से यज्ञ एवं 8 बजे से गायत्री मंत्र युग एवं गंगा दशहरा का विशेष पूजन हुआ। 11 बजे से संध्या 5 बजे तक अखंड जप हुआ तथा संध्या 5.30 बजे दीप महायज्ञ से पूर्णाहुति हुआ। गंगा दशहरा, गायत्री जयंती एवं गुरुदेव का महाप्रयाण दिवस का पूजन मनीषा, श्रुति एवं अपर्णा ने करवाई, तथा मुख्य यजमान सुबोध सपत्नी थे।

सबके उद्धार के लिए धरती पर आई थी गंगा

रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में कार्यक्रम में उपस्थित लोग। • हिन्दुस्तान

- गंगा दशहरा के मौके पर कार्यक्रम का आयोजन
- रुद्राभिषेक अभिषेक में बड़ी संख्या में जुटे लोग

सहरसा, निज संवाददाता। रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में मां गायत्री जयन्ति, गंगा दशहरा एवं पं. पूज्य गुरुदेव का महाप्रयाण दिवस का आयोजन हुआ। आयोजन में मां गायत्री जयन्ति एवं गंगा दशहरा का विशेष पूजन हुआ।

इस अवसर पर डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा गंगा देवलोक से शिव की जटाओं से होती हुई भगीरथ के तप के फलस्वरूप धरती पर आई थी। महाराजा सगर के सातहजार पुत्रों के उद्धार के लिए ही नहीं अपितु हम सभी के उद्धार के लिए भी आई थी। जब गंगा धरती पर आई थी तो कृषि कार्य अच्छे से हो पाई। उन्होने कहा-आज के हीं दिन अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक पंडित श्री राम शर्मा आचार्य अपने इह लीला को अपनी इच्छा से गायत्री माता के ब्राह्मी चेतना में समागए। उन्होंने कहा-गायत्री युग शक्ति है। शक्ति यानी क्रिया, उर्जा एवं शक्ति का श्रोत है। इसके माध्यम से हीं विचार क्रांति होगी। विचारों को बदलने का अभियान है विचार क्रांति और विचार बदलेगी गायत्री मंत्र के जप से। युग को बदलने के लिए ज्ञान की गंगा गायत्री को जन-जन तक पहुंचाने के लिए आज के पावन अवसर पर हम सभी गायत्री परिजन संकल्पित हैं। अज्ञान आभाव को दूर करने का एक हीं मंत्र है गायत्री मंत्र है।

इस अवसर पर शक्तिपीठ में अनेक कार्यक्रम हुए। जिसमें रुद्राभिषेक, यज्ञ, गायत्री जयन्ति एवं गंगा दशहरा का विशेष पूजन हुआ। वहीं संध्याकालीन दीप महायज्ञ से पूर्णाहुति हुआ। पूजन की सारी विधि मनीषा, श्रुति, अपर्णा ने करवाई तथा मुख्य यजमान सुबोध भगत सपत्नी थे।

मन की मधुरता व आत्मा के सदभाव को मिलाकर एक सुर में पिरोता है योग: डॉ अरूण कुमार जायसवाल

नवबिहार दूत संवाददाता

सहरसा। 10वीं अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उत्सव पर गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के उपासना कक्ष में योगाभ्यास कराया गया।जिसमें सैकड़ों योग साधकोंने योगाभ्यास किया। इस मौके पर गायत्री शक्तिपीठ ट्रस्टी डॉ अरुण कुमार जयसवाल ने योग की महत्तता एवं विशेषता को बतलाते हुए कहा कि सामान्य तौर पर लोग व्यायाम को योग कहते हैं।जबकि योग व्यायाम मात्र नहीं है।योग आत्मा और परमात्मा का मिलन है।योग जीवन पद्धति है। रोगी के लिए योग चिकित्सा पद्धति है और साधक के लिए योग साधना पद्धति है ।शरीर और आत्मा के लिए तोहफा है योग। खुद से खुद को मिलाने का मौका है। उन्होंने कहा आज हम चांद पर, मंगल पर चले गए। दुनिया की खोज खबर रखते हैं पर अपनी खोज खबर नहीं रखते हैं अपना पता भूल गए हैं।हम खुद को जान पाते हैं योग के माध्यम से। उन्होंने आगे कहा योग संगीत है।योग संगीत की लय की तरह है।मन की मधुरता और आत्मा के सदभाव को मिलाकर एक सुर में पिरोता है योग। तो जीवन भी संगीत मय हो जाता है। आज शरीर, मन और भावना के बीच असंतुलन है। कोई तालमेल नहीं रह गया है ।मन कुछ और कहता है, शरीर कुछ और करता है और भावना कुछ और। जीवन का लय आज हम सबका बिगड़ता चला गया है।चाहे शारीरिक परेशानी हो, मानसिक परेशानी हो, भावनात्मक परेशानी हो, पारिवारिक परेशानी हो, सामाजिक परेशानी हो, राष्ट्रीय परेशानी हो, वैश्विक परेशानी हो, लय खो गया है। ताल मात्रा खो गया है ।आज अंतरराष्ट्रीय योग दिवस है । लेकिन अगर इसको सही तरीके से कहा जाए तो योग क्षेम का उत्सव है।

उन्होंने आगे कहा कि जो नहीं है उसे प्राप्त करना योग है और उस प्राप्ति की रक्षा करना क्षेम है। योग प्राच्य विद्या है। योग से हम जीवन में खुश, प्रसन्न रहते हैं। इस क्रम के बाद शक्तिपीठ में योगाचार्य प्रखर और सनोज के द्वारा योग के नए नए आयाम को किए गए। जिसमें तारासन, मकरासन, वृक्षासन, गरुडासन, शवासन, अनुलोम विलोम आदि शामिल थे।

आत्मा और परमात्मा का मिलन कराता है योग

- गायत्री शक्तिपीठ में आयोजित हुआ कार्यक्रम
- विभिन्न आसनो का कराया गयाअभ्यास

सहरसा। शुक्रवार को 10वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उत्सव पर गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के उपासना कक्ष में योगाभ्यास कराया गया। जिसमें सैकड़ों योग साधकों ने योगाभ्यास किया।

इस मौके पर गायत्री शक्तिपीठ ट्रस्टी डा. अरुण कुमार जयसवाल ने योग की महत्तता एवं विशेषता को बतलाते हुए कहा सामान्यतौर पर लोग व्यायाम को योग कहते हैं। जबकि योग व्यायाम मात्र नहीं है। योग आत्मा और परमात्मा का मिलन है। योग जीवन पद्धति है। रोगी के लिए योग चिकित्सा पद्धति है और साधक के लिए योग साधना पद्धति है। शरीर और आत्मा के लिए तोहफा है योग। खुद से खुद को मिलाने का मौका है। उन्होंने कहा योग संगीत है। योग संगीत की लय की तरह है। मन की मधुरता और आत्मा के सदभाव को मिलाकर एक सुर में पिरोता है योग। तो जीवन भी संगीत मय हो जाता है। आज शरीर, मन और भावना के बीच डिसआर्डर है। कोई तालमेल नहीं रह गया है। मन कुछ और कहता है, शरीर कुछ और करता है और भावना कुछ और। जीवन का लय आज हम सबका बिगड़ता चला गया है।

शिक्षा दूसरा जन्म देने में सक्षम है तो ही शिक्षा सार्थक है: डॉ अरुण कुमार जयसवाल

[illegible] /सहरसा।

रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए ट्रस्टी डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा इस जीवन में बिना संघर्ष किए, बिना कष्ट उठाये, कोई व्यक्ति आगे नहीं बढ़ सकता।बल्कि जो लोग यही सिखलाया। हमारी शिक्षा व्यवस्था कैसी होनी चाहिए।इस पर उन्होंने चर्चा करते हुए कहा शिक्षा में क्या-क्या होना चाहिए। पहला: शिक्षक, दूसरा शिक्षार्थी, तीसरा शिक्षण प्रक्रिया और चौथा शैक्षणिक वातावरण।अगर यह सब हो तो ही शिक्षा व्यवस्था सुदृढ़ हो पाएगी।इन सब में सब कुछ होने के बावजूद भी अगर शैक्षणिक वातावरण न हो तो शिक्षा व्यवस्था सुदृढ़ नहीं हो पाएगी। उन्होंने कहा सबसे अधिक महत्वपूर्ण वातावरण का होना है। आज जीवन मूल्य संकट में है। विश्वास का संकट खड़ा हो गया है। यह वातावरण का ही प्रभाव है कि एक समय महर्षि श्री अरविंद, भगत सिंह, विवेकानंद, महात्मा गांधी जैसे महामानव भी हुए। शिक्षक हमेशा प्रेरक होते हैं। वह माता-पिता होते हैं। जन्म से सब शूद्र होते हैं, संस्कारों से द्विज होते हैं।एक शिक्षक ही हमें द्विज बनाते हैं शिक्षा हमें द्विज बनाती है। अगर शिक्षा दूसरा जन्म देने में सक्षम है तो ही शिक्षा सार्थक है। सुगढ़ हमें शिक्षक बनाते हैं, शिक्षा प्रणाली बनाती है। शिक्षा व्यवस्था बनाती है। हम व्यक्ति के रूप में जन्म लेते हैं, किंतु शिक्षा हमें व्यक्तित्व देती है।अगर शिक्षक, शिक्षा प्रणाली और शैक्षणिक वातावरण ठीक ढंग से मिल जाए तो शिक्षार्थी के व्यक्तित्व का निर्माण हो जाता है। लेकिन आज हम शिक्षा का मूल्यांकन करते हैं, उपलब्धियों का मूल्यांकन करते हैं।व्यक्तित्व का मूल्यांकन नहीं करते। शिक्षक का व्यक्तित्व भी शैक्षणिक वातावरण बनाता है। आज शिक्षक, शिक्षार्थी और शैक्षणिक प्रणाली में द्वेष भर गया है। जब तक यह सब ठीक नहीं होगा, शिक्षा व्यवस्था सुदृढ़, सुगढ़ नहीं बन पाएगा।इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ के प्रज्ञा मंडल, युवा मंडल ,महिला मंडल और सभी परिजन मौजूद थे।

www.jagran.com

आत्मा और परमात्मा के मिलन का तोहफा है योग : डा. अरुण

संबोधित करते ट्रस्टी • गायत्री शक्तिपीठ

संस, जागरण • सहरसा : शुक्रवार को गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के उपासना कक्ष में योगाभ्यास कराया गया जिसमें बड़ी संख्या में योग साधकों ने योगाभ्यास किया। इस मौके पर गायत्री शक्तिपीठ के ट्रस्टी डा. अरुण कुमार जायसवाल ने योग की महत्ता एवं विशेषता की चर्चा करते हुए कहा कि सामान्य तौर पर लोग व्यायाम को योग कहते हैं। जबकि योग व्यायाम मात्र नहीं है। योग आत्मा और परमात्मा का मिलन है। योग जीवन पद्धति है। रोगी के लिए योग चिकित्सा पद्धति और साधक के लिए योग साधना पद्धति है। शरीर और आत्मा के लिए तोहफा है योग। उन्होंने कहा कि आज हम चांद पर, मंगल पर चले गए। दुनिया की खोज खबर रखते हैं, पर अपनी खोज खबर नहीं रखते हैं, अपना पता भूल गए हैं। हम खुद को जान पाते हैं योग के माध्यम से। योग संगीत की लय की तरह है। मन की मधुरता और आत्मा के सदभाव को मिलाकर एक सुर में पिरोता है योग, तो जीवन भी संगीत मय हो जाता है। आज शरीर, मन और भावना के बीच डिसआर्डर है। कोई तालमेल नहीं रह गया है। मन कुछ कहता है, शरीर कुछ और करता है।

कपालभाति प्राणायाम के लाभ

यह चयापचय प्रक्रिया को बढ़ाता है और वज़न कम करने में मदद करता है।
नाड़ियों का शुद्धिकरण करता है।
पेट की माँसपेशियों को सक्रिय करता है, जो कि मधुमेह के रोगियों के लिए अत्यंत लाभदायक है।
रक्त परिसंचरण को ठीक करता है, और चेहरे पर चमक बढ़ाता है।
पाचन क्रिया को अच्छा करता है और पोषक तत्वों का शरीर में संचरण करता है इससे पेट कि चर्बी फलस्वरूप अपने आप कम हो जाती है।
मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र को ऊर्जान्वित करता है ।
मन को शांत करता है।

माह जून में इन गणमान्य अतिथियों ने पाँच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा एवं रूद्राभिषेक, यज्ञ एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा (गान, ज्ञान, ध्यान) में भाग लिया -

- आरती जी (ADM खगड़िया) - शिवाभिषेक, व्यक्तित्व परिष्कार सत्र, प्राकृतिक चिकित्सा एवं यज्ञ के लिए

- शशांक (सिविल जज खगड़िया) - शिवाभिषेक, व्यक्तित्व परिष्कार सत्र, प्राकृतिक चिकित्सा एवं यज्ञ के लिए

आगामी कार्यक्रम

- **7 जुलाई -भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का पुरस्कार वितरण समारोह**

- **21 जुलाई को गुरू पूर्णिमा पर्व**

- **प्रत्येक रविवार व्यक्तित्व परिष्कार सत्र**

भाव पथ

माँ तुम हो पराप्रकृति, कितना ध्यान रखती हो
हम कपूत भले बन जाते, पर कुमाता तुम न बनती हो
जन्म लेते इस धरती पर, माता-पिता बन जाती हो
पालन-पोषण करके हमारा, इतना बड़ा बनाती हो ।। माँ तुम हो -----
क्रोधित होते माता-पिता तो, दादा-दादी बन जाती हो
नाना-नानी बनकर तुम तो, गलती हमारी छुपाती हो ।। माँ तुम हो -----
जब हताश हो जाते हम हैं, तुम हिम्मत बन जाती हो
निराशा के गहन अंधकार में, प्रकाश बनकर छाती हो ।। माँ तुम हो -----
झुलसती गर्मी में तुम माता, हवा बनकर आती हो
दुलराती हो, सहलाती हो, पसीना भी सुखाती हो ।। माँ तुम हो -----
कड़कती ठण्ड में तुम माता, अग्नि ही बन जाती हो
काँपती देह को तुम माता, उष्मा भी दे जाती हो ।। माँ तुम हो -----
पंच महाभूत बनकर माता, हमें जीवनदान देती हो
पर हम तुमको क्या देते हैं, यह सोच-सोच शरमाते हैं ।। माँ तुम हो -----
तुम्हारे वरदानों की तो माता, गिनती नहीं हम कर सकते
पर हम कितने कृतघ्न हैं माता, तुमको ही झुठलाते हैं ।। माँ तुम हो -----

– डॉ. लीना सिन्हा

परिचय

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते।।

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

अखिल विश्व गायत्री परिवार का दर्शन है- मनुष्य में देवत्व का जागरण और धरती पर स्वर्ग का अवतरण। यह पूरे युग को बदलने के अपने सपने को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों को अंजाम देता है। इन गतिविधियों का मुख्य फोकस विचार परिवर्तन आंदोलन है, जो सभी प्राणियों में धार्मिक सोच विकसित कर रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में सहरसा और आसपास के क्षेत्रों में स्थित गायत्री परिवार के सदस्य शामिल हैं। गायत्री शक्तिपीठ ट्रस्ट, सहरसा स्थानीय निकाय है जो सहरसा और उसके आसपास कई आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित अनेकों उल्लेखनीय गतिविधियों, जैसे- यज्ञ, संस्कार, बाल संस्कारशाला, पर्यावरण संरक्षण, स्वावलंबन प्रशिक्षण, योग प्रशिक्षण, कम्प्यूटर शिक्षण, ह्यूमन लायब्रेरी, भारतीय संस्कृति प्रसार, स्वास्थ्य संवर्धन, जीवन प्रबंधन, समय प्रबंधन आदि वर्कशॉप का आयोजन करता है। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के सदस्य व्यवसायी, आईटी पेशेवर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, शिक्षक, डॉक्टर आदि हैं, जो सभी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक सिद्धांतों के प्रति उनकी भक्ति और प्रेम से बंधे हैं, जिन्हें परमपूज्य गुरुदेव के रूप में स्मरण किया जाता है।

स्वेच्छा सहयोग यानि अपना अनुदान इस Account No. पर भेज सकते हैं

Account No. – 11024100553 IFSC code – SBIN0003602

पत्राचार	:	गायत्री शक्तिपीठ, प्रतापनगर, सहरसा, बिहार (852201)
संपर्क सूत्र	:	06478-228787, 9470454241
Email	:	gspsaharsa@gmail.com
Website	:	https://gsps.co.in/
Social Connect	:	https://www.youtube.com/@GAYATRISHAKTIPEETHSAHARSA
		https://www.facebook.com/gayatrishaktipeeth.saharsa.39
		https://www.instagram.com/gsp_saharsa/?hl=en
		https://www.kooapp.com/profile/gayatri7AJ0S6
		https://twitter.com/gsp_saharsa?lang=en
		https://www.linkedin.com/in/gayatri-shaktipeeth-saharsa-21a5671aa/